आत्मनिर्भर भारत महामना पं. मदन मोहन मालवीय के दृष्टि में

डॉ0 आनन्द कुमार शर्मा
असि0 प्रोफे0, राजकीय कालिज ऑफ आर्ट, चंडीगढ़

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 आनन्द कुमार शर्मा,
आत्मनिर्भर भारत महामना पं. मदन मोहन मालवीय के दृष्टि में,
Artistic Narration 2017,
Vol. VIII, No.2, pp 78- 81
http://anubooks.com/?page_id=485

सारांश

हमारा देश अंग्रेजों की राजनैतिक दासता से अवश्य स्वतन्त्र हुआ, परन्तु कुटिल अंग्रेजों ने यहाँ से जाते–जाते बृहद भारत के कई टुकड़े कर दिये। भारत विश्व में सोने की चिड़िया के नाम से चर्चित देश रहा है। पिछले दो हजार वर्षों में विदेशियों ने जितना भारत को लूटा व अहित किया, उससे कई गुना अधिक केवल अंग्रेजो ने भारत को, लूट कर उसे विश्व का निर्धन देश बना दिया। भारत के प्रखर राष्ट्रवादी नेता अंग्रेजों की कुटिलता को जानते थे। हिन्दुस्तान में हिन्दु बहुसंख्यक होकर भी, अल्पसंख्यक बन गये है। महान भारत नन्हें देश इसराइल, जापान, जर्मनी, कोरिया इत्यादि से क्यों पिछड़ा है ? इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

शिक्षा केवल भौतिक सुखों को पाने का माध्यम बन गया है। महामना मालवीय जी सदैव हिन्दू, हिन्दी व हिन्दोस्तान के हितों के पक्षधर थे। उन्होनें काशी नरेश से लेकर, दानवीर विड़ला तथा हजारों अन्य हिन्दुत्व के पक्षधर दानवीरों से दान ग्रहण करके, भारत का श्रेष्ठ विश्व विद्यालय बनवाया। भारत के अर्न्तराष्ट्रीय व हिन्दू विरोधी विचार के धर्म निरपेक्ष नेताओं ने, अपना योगदान देना तो दूर रहा, उन्होने भरपूर प्रयास किया कि बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी से ''हिन्दू'' शब्द हटा दिया जाय। प्रबल विरोध के कारण वे ऐसा नहीं कर पाये। भविष्य द्रष्टा महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी का स्वप्न था कि भारत के सभी युवा जो उच्च शिक्षा लेने हेतु विदेश जाते है और वहाँ से विदेशीपन व अराष्ट्रीय भावना लेकर लौटते हैं, इसी बी.एच.यू. वाराणसी में उच्च शिक्षा अर्जित करें। इसी कारण उन्होनें आधुनिक शिक्षा से लेकर प्राचीन भारत की शिक्षा तथा अन्य सभी उपयोगी शिक्षा को यहाँ अध्ययन व अध्यापन की व्यवस्था की गयी । महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी एक परम्परावादी हिन्दू थे। उनका हिन्दुत्त्व सार्वभौम भातृत्त्व, धार्मिक, सहिष्णुता, सबके कल्याणकारी भावना से जुड़ा था। वे चाहते थे कि भारत ऐसा राष्ट्र बने, जहाँ सभी धर्मों को समान आदर मिले।

हमारा देश 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों की राजनैतिक दासता से अवश्य स्वतन्त्र हुआ, परन्तु कुटिल अंग्रेजों ने यहाँ से जाते–जाते बृहद भारत के कई टुकड़े कर दिये। उन्होनें भारत का विभाजन पश्चिमी पाकिस्तान, पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्ला देश) श्रीलंका, वर्मा (म्यांमार), नेपाल, भूटान, सिक्किम, मालद्वीप इत्यादि देशों में कर दिया । यह विभाजन इन्होने नस्ल, धर्म, जाति इत्यादि के आधार पर अप्राकृतिक ढंग से किया । इन देशों को भारत से कोई कष्ट नही है, परन्तु पड़ोसी देश पाकिस्तान भारत के साथ शत्रुवत व्यवहार रखता है। पश्चिमी पाकिस्तान से तो भारत के अब तक 4 युद्ध हो चुके है । यद्यपि वह सभी युद्धों में भारत से हारा है परन्तु वह आसुरी प्रवृति का है। भारत से बदला लेने के लिए अब वह छद्म युद्ध लड़ रहा है। भारत में आतंकी हमला करवाना, नकली नोट व अवैध घातक हथियार भेजना, अन्तराष्ट्रीय स्तर पर काट–मार का झूठा मामला उठा कर भारत की छवि धूमिल करना, अमेरिका, चीन व अन्य देशों से भारत को पराजित करने हेतु घातक हथियार प्राप्त करना, अपने देश में क्षेप्यास्त्र व एटम बम बनाना इत्यादि उसके यह कष्त्य निःसंन्देह भारत के लिए कष्टकारी है।

भारत वैदिक से पूर्व, विश्व का एक सम्पन्न व सर्वगुण युक्त देश रहा है। भारत विश्व में सोने की चिड़िया के नाम से चर्चित देश रहा है। भारत की यह सम्पन्नता उसके लिए दुख का कारण भी बना। मध्य व पश्चिमी एशिया, अरब देश, यूरोपीय व भूमध्य सागरीय देश भारत को सोने की चिड़िया सुनकर बारी–बारी से भारत को लूटने के लिए आक्रमण करते रहे, यहाँ के राज प्रासाद, मंदिर, किले इत्यादि को इन लोगों ने लूटा व तोड़ा, लाखों की संख्या मे भारतीयों का वध किया। सबके अन्त में इस देश में अंग्रेज आये। इन्होनें भारत की सर्वोत्तम कृषि–व्यवस्था, उद्योग–धन्धे शिल्प की कारीगरी, व्यापार, शिक्षा, धर्म, यहाँ की शासन व्यवस्था, जन–स्वास्थ्य इत्यादि को पूरी तरह से नष्ट कर दिया । यदि उपरोक्त आक्रमणों की समीक्षा की जाय, तो पिछले दो हजार वर्षों में विदेशियों ने जितना भारत को लूटा व अहित किया, उससे कई गुना अधिक केवल अंग्रेजो ने भारत को, लूट कर उसे विश्व का निर्धन देश बना दिया। भारत में अंग्रेजो के आने के पूर्व इंग्लैंड एक पिछड़ा निर्धन राष्ट्र था, परन्तु वह भारत के अमूल्य निधि को लूटने के बाद विश्व का धनी व बली राष्ट्र बन गया।

भारत के प्रखर राष्ट्रवादी नेता जैसे महामना पं. मदन मोहन मानवीय, सुभाषचन्द्रबोस, सरदार बल्लभ भाई पटेल, फांसी पर झूलने वाले क्रान्तिकारी बीर नेता स्वामीरामतीर्थ व स्वामी अरविन्द इत्यादि अंग्रेजों की कुटिलता को जानते थे। यह लोभ हिन्दुस्तान, हिन्दी व हिन्दुत्त्व के प्रखर पक्षधर राष्ट्रवादी नेता थे, परन्तु कांग्रेस पार्टी के धर्मनिरपेक्ष वह अंग्रेजों से मिलते विचार के कारण यह सभी राष्ट्रवादी व हिन्दुत्त्व विचार के नेता उपेक्षित कर दिये गये।

वर्तमान में धर्म निरपेक्षता वाले कुछ पश्चिमी देशों के विचार व सोच के नेताओं के कारण, भारत में राष्ट्रीय चेतना व हिन्दुत्त्व की सोच में कमी आयी है। हिन्दुस्तान में हिन्दु बहुसंख्यक होकर भी, अल्पसंख्यक बन गये है। आज हम विदेशियों के चाटूकार देश बन गये है। वर्तमान में हमारी षासन व्यवस्था, कृषि–शिल्प–व्यापार–व्यवस्था, अंग्रेजो के बनाये गये नियम व कानून के अनुसार ही चल रहे है। इसी कारण हमारा धनी देश दिनों दिन निर्धन देश बनता जा रहा है। हम विदेशियों के मकड़ी जाले में निरन्तर फंसते जा रहे है। सर्वोत्तम उपजाऊ, भूमि, श्रेष्ठवन, खनिज–सम्पदा, सदाबहार–मौसम, मानसूनी–वर्षा व नदी–जल सम्पदा, कुशल श्रमिक व वैज्ञानिकों से पूर्ण, वीर सैनिकों व उत्तम जनसंख्या

के बावजूद मेरा महान भारत नन्हें देश इसराइल, जापान, जर्मनी, कोरिया इत्यादि से क्यों पिछड़ा है ? इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

आज जब सभी जगह हिंसा बढ़ती जा रही है, उग्रवाद ताडंव नृत्य कर रहा है। मानवाधिकार रूपी द्रौपदी का सार्वजनिक रूप से चीर हरण हो रहा है । देश के नेता वर्तमान भ्रष्टाचार, दुराचार में लिप्त है, देश के नेता गण अपने पार्टी व कुर्सी के लिए, धर्म–जाति, क्षेत्र का मामला उठा कर संकीर्ण राजनीति कर रहे हैं । देष का भले सैकड़ों भाग हो जाय, उनकी स्वार्थ की राजनीति में परिवर्तन नहीं दिख रहा है। शिक्षा केवल भौतिक सुखों को पाने का माध्यम बन गया है। धर्म व अध्ययन केवल बौद्धिक व संस्कारी वर्गों के लिए ही विचारणीय है। पुलिस व प्रशासन गुण्डों व माफियाओं के सामने बौना हो गया है। आज न्यायपालिका में भी भ्रष्टाचार का घुन लगना प्रारम्भ हो गया है। ऐसे दुःखदायी क्षणों में महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी के कार्य व सम्पूर्ण चिन्तन देश को प्रगति पथ पर ले जाने में बहुत सहायक हैं। महामना मालवीय जी सदैव हिन्दू, हिन्दी व हिन्दोस्तान के हितों के पक्षधर थे। यह कितना खेद व दुख का विषय है कि इसी वर्ष महाराष्ट्र की विधानसभा में, जब नव निर्वाचित विधायक लोग शपथ ग्रहण कर रहे थें और हिन्दी राष्ट्रभाषा में अपना शपथ पत्र पढ़ रहे थे, तो उन पर ''मनसे'' पार्टी के गुण्डों ने आक्रमण करके मारा पीटा। वही बहुतेरे अंग्रेजों व अन्य भाषा में शपथ लिये तो उनका स्वागत हुआ। उपरोक्त घटना को पूरा देश देखा। देश के शीर्ष नेता उपरोक्त घटना के विरूद्ध कोई कार्यवाही नहीं कर सके। इसका तात्पर्य यह है कि गुलामी की अंग्रेजी भाषा, हमको स्वीकार है। उपरोक्त राष्ट्रभाषा हिन्दी स्वीकार नही है, परन्तु देश के विघटन व पुनः गुलाम बनने का बीजारोपण अवश्य है।

भारत के अलीगढ़ में मुस्लिम यूनिवर्सिटी का बनना महामना मालवीय जी के लिए चुनौती बन गया था। उन्होनें काशी नरेश से लेकर, दानवीर विड़ला तथा हजारों अन्य हिन्दुत्व के पक्षधर दानवीरों से दान ग्रहण करके, भारत का श्रेष्ठ विश्व विद्यालय बनवाया। भारत के अर्न्तराष्ट्रीय व हिन्दू विरोधी विचार के धर्म निरपेक्ष नेताओं ने, अपना योगदान देना तो दूर रहा, उन्होने भरपूर प्रयास किया कि बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी से ''हिन्दू'' शब्द हटा दिया जाय। प्रबल विरोध के कारण वे ऐसा नहीं कर पाये। भविष्य द्रष्टा महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी का स्वप्न था कि भारत के सभी युवा जो उच्च शिक्षा लेने हेतु विदेश जाते है और वहाँ से विदेशीपन व अराष्ट्रीय भावना लेकर लौटते हैं, इसी बी.एच.यू. वाराणसी में उच्च शिक्षा अर्जित करें। इसी कारण उन्होनें आधुनिक शिक्षा से लेकर प्राचीन भारत की शिक्षा तथा अन्य सभी उपयोगी शिक्षा को यहाँ अध्ययन व अध्यापन की व्यवस्था की गयी । यह विश्वविद्यालय विश्व के श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में से एक है, जहाँ बिना–धर्म–विभेद, क्षेत्रियता के विश्व–स्तर की शिक्षा दी जाती है। यहाँ सम्पूर्ण विश्व के कोने–कोने से हजारों की संख्या में विद्यार्थी आकर पढ़ रहें है। यहाँ सर्वोत्तम शिक्षा व कम शिक्षा शुल्क है। यह विश्व का सर्वोत्तम छात्रावास व सर्वाधिक विषयों में सर्वोच्च शिक्षा देने वाला विश्वविद्यालय है।

सिद्धान्तकार टी.एन.मदन और आशीष नंदी, पं. जे.एल.नेहरू, वी.आर.अम्बेडकर इत्यादि की पश्चिमी देशों की सोच के कारण हमारे देश के संविधान में धर्म निरपेक्ष शब्द जुड़ा। भारत जैसे धार्मिक देश में धर्म निरपेक्षता का तात्पर्य धर्म विहीन स्वच्छन्दता और कानून उनके अधीन है। हमारे देश के प्राचीन काल में जब राजतन्त्र था, राजा धार्मिक व ज्ञानी होते थे, परन्तु आज सर्वत्र इस विचार धारा में परिवर्तन

हो गया है। पं. मदन मोहन मालवीय जी अपनी व्यापक राष्ट्रवाद, हिन्दुत्त्व के अवधारणा के साथ 'वसुधैव कुटुम्बकम' की सनातन भारतीय परम्परा पर पूर्ण आस्था रखते थे। वे सम्पूर्ण विश्व में शान्ति, समृद्धि और न्याय की स्थापना के इच्छुक थे। इसी कारण वे निःशस्त्रीकरण, समान व्यापार सुविधा, सभी राष्ट्रों में सौहाद्र चाहते थे। वे सामाज्यवाद व नस्लवाद के घोर विरोधी थे।

महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी एक परम्परावादी हिन्दू थे। उनका हिन्दुत्त्व सार्वभौम भातृत्त्व, धार्मिक, सहिष्णुता, सबके कल्याणकारी भावना से जुड़ा था। वे चाहते थे कि भारत ऐसा राष्ट्र बने, जहाँ सभी धर्मों को समान आदर मिले, वे यांत्रिक राष्ट्रवाद की जगह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के समर्थक थे। वे कहते थे कि भारत के सभी निवासियों की मातृभूमि भारत ही है और उन सभी को शिक्षा समेत सभी क्षेत्रों में उन्नति करने का समान अवसर मिले। राष्ट्रवाद की अलख जगाने में वे शिक्षा को सशक्त माध्यम मानते थे। शिक्षा में राष्ट्रीयता व नैतिकता का पाठ पढ़ाने की अनिवार्यता पर बल देते थे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के महान संस्थापक कृषिकल्पमहान राष्ट्रवादी व हिन्दुवादी सन्त पूज्य महामना पंडित मदन मोहन मालवीय का मेरा उनको शत्–शत् श्रद्धा सुमन समर्पित है।

Reference Book

1. Prajna (Prygya), Kashi Hindu Viswavidyalay Patrika, Year 2008-09
2. Mahamanasandesh,BHU Press, Kashi Hindu Viswavidyalay, Varanasi,221005
3. Prajna (Prygya), Kashi Hindu Viswavidyalay Patrika, Year 2011-12
4. Information Booklet, Kashi Hindu Viswavidyalay
5. Prajna (Prygya), Swarn Jayanti Visheshank,Kashi Hindu Viswavidyalay Patrika, Year 2010